<u>‘तेरा वर्ष‘</u>

स्वराज्याधिकारी सप्ताह

19.05.2013

1. **<u>स्वमान</u>** - मैं स्वराज्याधिकारी हूँ।

- ``बापदादा हर बच्चे से यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा सदा स्वराज्य अधिकारी बनके रहे। कभी-कभी नहीं क्योंकि मन-बुद्धि-संस्कार मेरा है तो मेरे के ऊपर सदा अधिकार रहता है। ऐसे मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर पूरा ही अधिकारी हो, इसको कहा जाता है स्वराज्यधारी। जो आर्डर करो उसी प्रमाण यह कार्य करने के लिए निमित्त हैं। लेकिन इसके लिए चलते-फिरते कार्य करते **मालिकपन** का नशा होना चाहिए।`` **– शिवभगवानुवाच**

2. **<u>योगाभ्यास</u> –**

स्वराज्याधिकारी स्थिति बनाने के लिए ब्रह्मा बाबा ने जो विशेष दो अभ्यास किए थे, वही इस बार हम भी करेंगे -

अ. ब्रह्मा बाबा ने यह कूट-कूटकर पक्का किया था कि मैं आत्मा हूँ और ये सब भी आत्माएँ हैं...यशोदा भी आत्मा है, नारायण भी आत्मा है, राधिका भी आत्मा है...आत्मा, आत्मा, आत्मा की जैसे बाबा ने धुन लगा दी थी...यही धुन हम भी लगायें...।

ब. बाबा रोज रात्रि में सोने से पूर्व अपने सूक्ष्म व स्थूल कर्मेन्द्रियों का दरबार लगाया करते थे...और एक-एक से उनके सारे दिन का समाचार लिया करते थे...विशेष मन मंत्री से बातें किया करते थे...उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं, इसका निर्देश दिया करते थे...स्वराज्याधिकारी स्थिति बनाने के लिए हम भी रोज अपना दरबार लगायें...।

स. मन्सा सेवा – ``मन्सा सेवा का अटेन्शन रखना, इतनी दुःखी आत्माओं को, चिल्ला रही हैं उन्हों को, किरणें देने की सेवा में भी एकस्ट्रा मन को लगाना। मन को फ्री नहीं छोड़ना।`` **– बापदादा**

3. **<u>धारणा</u> – अटेन्शन**

- ``मन आपके आर्डर में चले, ना कि आप मन के आर्डर में चलो। चाहते हो ज्ञान की बातों में रमण करें, और आ जाती है फालतू बात। तो क्या हुआ? मन मालिक बना या आप मालिक बने? तो सभी ने यह होमवर्क समझा? मन जीत बनना है । जो आर्डर करें, वह मानेगा जरुर मानेगा, **अटेन्शन** देना पड़ेगा बस।`` **– बाबा**

4. **<u>चिंतन</u> – मनजीत जगतजीत कैसे बनें?**

- क्यों आवश्यक है मनजीत बनना?
- मनजीत कैसे बनें?
- मनजीत ही जगतजीत बनेंगे, क्यों?

5. **<u>तपस्वियों प्रति</u> –** प्रिय तपस्वियों! वर्तमान समय संसार का मालिक संसार को स्वर्ग बना रहा है। उसे तलाश है ऐसे योग्य आत्माओं की जो उसके इस स्वर्ग को संभाल सकें, स्वर्ग को स्वर्ग बनाकर रख सकें। ऐसा वही आत्मायें कर पायेंगी जिन्होंने स्वयं को जीता हो, जो जितेन्द्रिय हों, जो मनजीत हों। स्वर्ग में तो हम सभी ब्रह्मावत्स जायेंगे लेकिन राज्य भाग्य का सुख उन्हें मिल पायेगा जो अभी स्वयं को स्वराज्याधिकारी बनायेंगे। **तो अब धुन लगा दें – मनजीत सो जगतजीत बनने का।**